5.7 मैक्यावली द्वारा सरकार के विभिन्न रूपों का वर्गीकरण

मैक्यावली का सरकार के विभिन्न रूपों का वर्गीकरण अव्यवस्थित है। उसकी दो प्रमुख रचनाओं में सरकार का प्रतिपादन पर्याप्त भिन्न रूप में हुआ है। इतना ही नहीं वह असंगत और परस्पर विरोधी भी है। "प्रिंस" में राजतंत्रों या निरंकुश सरकारों का विवेचन है जबकि "डिस्कोर्सेज़" में उसने विस्तारित रोमन गणराज्य के प्रति अपनी श्रद्धा प्रदर्शित की है। मैक्यावली के रोमन गणराज्य की स्वतंत्रता और स्वशासन के प्रति स्पष्ट रूप से वास्तविक उत्साह की तुलना में निरंकुश राजतंत्र के विवरण में कोई विशेष बात नहीं थी। दोनों ही प्रकारों में उसका बल राज्य के संरक्षण के मूलभूत सिद्धांतों पर रहा जो उसके कानूनों की श्रेष्ठता पर निर्भर हैं क्योंकि यह उसके नागरिकों के सभी नागरिक गुणों का स्रोत है। राजतंत्र में भी स्थिर सरकार के लिए प्रमुख शर्त यह है कि वह कानून द्वारा विनियमित हो। इस प्रकार, मैक्यावली ने सरकारी सत्ता के दुरुपयोग के विरुद्ध गैर-कानूनी अहिंसा को रोकने के लिए कानूनी उपायों की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। उसने शासक-वर्ग में अव्यवस्था की राजनीतिक, कष्टदायी और उत्पीड़नकारी नीतियों की मूर्खता की ओर संकेत किया।

दोनों ही पुस्तकों में मैक्यावली के उन गुणों को समान रूप से प्रदर्शित किया गया है जिनके लिए वह विशेष रूप से प्रसिद्ध है। ये गुण हैं - राजनीतिक उद्देश्य से अनैतिक साधनों के उपयोग को नज़रअंदाज करना और यह विश्वास कि अधिकांशतः सरकारें बल और चालाकी पर निर्भर करती हैं। मैक्यावली ने कभी भी अपने विश्वास का आधार कानून निर्माता सर्वशक्तिमान ईश्वर को नहीं बनाया। उसका विश्वास निरंकुशवाद के सामान्य सिद्धांत में था। वैसे, रोमन गणराज्य में लोकप्रिय सरकार के लिए जिस प्रकार का वास्तविक उत्साह दिखाई देता है वैसा उत्साह "प्रिंस" में नहीं पाया जाता। लेकिन, जिस समय उसने इसे लिखा तब उसका यह विश्वास था कि यह इटली में अव्यवहार्य है। दोनों ही रचनाएँ उसी विषय के विभिन्न पक्षों को प्रस्तुत करती हैं। जैसे, राज्यों के उत्थान और पतन का कारण और ऐसे उपाय जिनकी सहायता से राजनेता उन्हें स्थायित्व प्रदान कर सकते हैं। यह राज्यों या सरकार के रूपों के दो प्रकार के वर्गीकरण से मेल खाता है। राजा का प्रमुख उद्देश्य राज्य की स्थिरता और संरक्षण है। मैक्यावली, जहाँ संभव हो, कोमल शासन (gentle rule) के पक्ष में था और उसका मानना था कि कठोरता का उपयोग केवल नियंत्रित रूप में ही होना चाहिए। उसका स्पष्ट रूप में विश्वास था कि सरकार तब अधिक स्थिर होती है जब सत्ता में कई लोग भागीदार होते हैं। वह शासकों के चयन के लिए चुनाव के तरीके को आनुवंशिक चयन से अधिक अच्छा समझता था। जन-कल्याण के मामलों में, उसने लिखा है कि लोगों को उचित उपायों के सुझाने की सामान्य रूप से स्वतंत्रता होनी चाहिए और किसी भी निर्णय पर पहुँचने के लिए विचार-विमर्श की आजादी होनी चाहिए। उसने अपनी रचना "डिस्कोर्सेज़" में यह मत व्यक्त किया कि लोग स्वतंत्र और ताकतवर होने चाहिए ताकि वे विद्रोह के उपायों का सहारा न लेकर राज्य कार्यों में सहयोग करें। उसके मन में राजा की तुलना में जो लोग भ्रष्ट नहीं हैं उनके गुणों और निर्णय के बारे में बहुत ऊँची राय थी। इन पर्यवेक्षणों से हमें मैक्यावली के दर्शन के परस्पर विरोधी विचारों का पता चलता है। एक ओर तो वह निरंकुश राजतंत्र के पक्ष में है तथा दूसरी ओर वह गणराज्य का समर्थन करता है। सैबाइन के अनुसार, "उसका निर्णय दो बातों से प्रभावित था - एक ओर तो साधन संपन्न तानाशाह तथा दूसरी ओर स्वतंत्र स्वशासी जनता। ये बातें सुसंगत नहीं थीं। उसने दोनों को साथ-साथ कुछ अनिश्चित ढंग से जोड़ दिया। उसके सिद्धांत क्रमशः हैं - पहले राज्य की स्थापना करें और फिर इसका संरक्षण करें। इसे अधिक आधुनिक ढंग से ऐसा कहा जा सकता है कि उसका एक सिद्धांत क्रांति के पक्ष में है और दूसरा सरकार के पक्ष में।" स्पष्ट रूप से, उसने तानाशाही की सिफ़ारिश मुख्य रूप से भ्रष्ट राज्य के सुधार के लिए और इसकी सुरक्षा के परिरक्षण के लिए की। परंतु उसका विश्वास था कि राज्य को तभी स्थायी बनाया जा सकता है यदि जनता का भी सरकार को चलाने में कुछ हिस्सा हो और राजा राज्य का सामान्य कार्य कानून के अनुसार चलाए। लेकिन यह तभी संभव है जब उसके मन में प्रजा की संपत्ति और अधिकारों के प्रति आवश्यक सम्मान हो। निरंकुश हिंसा, भ्रष्ट राज्यों के लिए और विशिष्ट परिस्थितियों में एक बहुत ही सशक्त राजनीतिक उपचार है। लेकिन यह ऐसा विषय है जिसका बहुत सावधानी से प्रयोग करना आवश्यक है।

5.8 विवर्धन का सिद्धांत (The Doctrine of Aggrandisement)

मैक्यावली ने "प्रिंस" और "डिस्कोर्सेज़" दोनों में ही राज्य के क्षेत्र के विस्तार की आवश्यकता पर बल दिया है। उसके अनुसार, राज्य का विस्तार हो अन्यथा वह नष्ट हो जाएगा। उसका राज्य के अधिकार-क्षेत्र के विस्तार का अभिप्राय दो या तीन सामाजिक अथवा राजनीतिक संगठनों को मिलाना नहीं था बल्कि उसका मतलब एक ही राजा के शासन के अधीन कई राज्यों का अधीनीकरण था। अपने देश में अधिकार-क्षेत्र का विस्तार आसान है क्योंकि वहाँ भाषा या किसी संस्था द्वारा विजित लोगों के

आत्मसात्करण में कोई कठिनाई नहीं होती। रोमन राज्य और इसकी क्षेत्र-विस्तार की नीति ने संभवतः मैक्यावली के सामने एक आदर्श स्थापित किया। राजनीतिक विवर्धन (political aggrandisement) तथा राज्य के संरक्षण ((preservationof state) दोनों के लिए शस्त्रों का बल आवश्यक था। लेकिन बल का प्रयोग बहुत समझदारी से और कुशलतापूर्वक करने की आवश्यकता होती है। राजतंत्र में राजा को पूर्व-प्रचलित रीति-रिवाज़ों और उस क्षेत्र की संस्थाओं का पर्याप्त सम्मान करना चाहिए क्योंकि लोगों के लिए ये रीति-रिवाज़ आदि उनकी स्वतंत्रता और जीवन से भी अधिक प्रिय होते हैं। लेकिन किसी प्रकार की कानून-व्यवस्था स्थापित करने के लिए, विशेष रूप से, जहाँ के लोग पूर्ण रूप से भ्रष्ट हों और कानून उन्हें रोकने में असमर्थ हो वहाँ राजतंत्रीय व्यवस्था अधिक उपयुक्त है। इसलिए शक्तिशाली लोगों के भ्रष्टाचार और अत्यधिक महत्वाकांक्षाओं पर लगाम लगाने के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि किसी ऐसी उच्चतर शक्ति की स्थापना की जाए जो राजकीय व्यक्ति हो और उसके पास निरंकुश अधिकार और शक्ति हो।

मैक्यावली के दोषदर्शी और राजा के पक्ष में पक्षपातपूर्ण निर्णय के बावजूद इस तथ्य को गलत नहीं ठहराया जा सकता कि उसका उदारवादी और विधि-सम्मत सरकार के प्रति आदर-भाव था। जहाँ संभव हुआ, वहाँ उसका झुकाव लोकप्रिय सरकार के पक्ष में था और जहाँ राजतंत्र की आवश्यकता थी वहाँ उसका भी समर्थक था। इन दोनों प्रकार की शासन-व्यवस्था में सुशिक्षित सिपाहियों की सेना का होना भी आवश्यक था क्योंकि सरकार के संचालन के लिए शक्ति का होना आवश्यक है। शासक को बड़ी भव्य योजनाओं और उद्यमों द्वारा प्रजा की कल्पना को प्रोत्साहित करते रहना चाहिए और उसे कला एवं साहित्य को संरक्षण देना चाहिए। एक आदर्श राजा को नैतिकता-मुक्त प्रबुद्ध तानाशाह होना चाहिए जबकि गणराज्य के शासक या शासक-वर्ग को कानून की सर्वोच्चता को बनाए रखना चाहिए क्योंकि राज्य का संरक्षण कानून की श्रेष्ठता पर निर्भर करता है। कानून नागरिकों के सभी शिष्ट गुणों का स्रोत है और यह जनता के राष्ट्रीय चरित्र का निर्धारण करता है। मैक्यावली राज्यतंत्र और गणराज्य दोनों प्रकार की सरकारों को आदर्श मानता है लेकिन अभिजात वर्ग और कुलीन वर्ग के बारे में उसकी बहुत राय ही घटिया थी। इन्हें वह राजतंत्र और मध्यम वर्ग का विरोधी समझता था तथा उसके विचार में व्यवस्थित सरकार को उनका दमन या उन्हें देश से निर्वासित कर देना चाहिए। इसके साथ ही जहाँ मैक्यावली अभिजात वर्ग को नापसंद करता था वहीं वह भाड़े के सैनिकों से घृणा करता था, क्योंकि वे कभी भी अराजकता और कानूनी अव्यवस्था के मुख्य कारण सिद्ध हो सकते हैं और अंततः वे राज्य की स्थिरता को नष्ट कर सकते हैं। शासक के लिए युद्ध कला अत्यधिक महत्वपूर्ण है, उसी से उसे सभी साहसपूर्ण अध्यवसायों में सफलता प्राप्त होती है। इसलिए उसे अपने पास राष्ट्र के प्रति समर्पित विश्वासपात्र, युद्ध कला में सुशिक्षित और अत्यधिक अनुशासित सेना रखनी चाहिए। मैक्यावली के इस विश्वास और दोषदर्शितापूर्ण राजनीतिक सम्मति के पीछे उसकी राष्ट्रभक्ति और इटली के एकीकरण तथा आतंरिक अव्यवस्था और विदेशी आक्रांताओं से संरक्षण की भावना थी। उसने स्पष्ट रूप से कहा था कि अपने देश के प्रति अपना दायित्व अन्य सभी कर्त्तव्यों से बढ़कर है।

5.9 मूल्यांकन

मैक्यावली के राजनीतिक सिद्धांतों का सुव्यवस्थित ढंग से विकास नहीं हुआ था। वे मुख्यतः किन्हीं खास स्थितियों में व्यक्त किए हुए विचार थे। सैबाइन के शब्दों में - "मैक्यावली का चरित्र और उसके दर्शन का वास्तविक आशय आधुनिक इतिहास के रहस्यों में घिरा रहा है। उसे परले सिरे का दोषदर्शी

और आवेगपूर्ण देशभक्त, प्रबल राष्ट्रवादी, राजनीतिक जेसुइट (political jesuit), निश्चयपूर्ण लोकतंत्री और तानाशाह शासकों का अनैतिकतापूर्ण विश्वास जीतने का इच्छुक समझा जाता था। उपर्युक्त विचार चाहे कितने भी परस्पर विरोधी प्रतीत हों उसमें संभवतः कुछ न कुछ सच्चाई है। इसमें जो एक बात बिलकुल सत्य है वह यह है कि उनमें से कोई भी मैक्यावली या उसके विचारों का सही चित्र प्रस्तुत नहीं करता।" इसका कारण यह है कि उसके दर्शन, या उसकी अस्पष्ट संकल्पना में प्रायः एक ऐसा सुसंगत दृष्टिकोण दिखाई देता है जिससे एक राजनीतिक सिद्धांत विकसित किया जा सकता है और वास्तव में, उसकी मृत्यु के बाद इस रूप में विकसित किया भी गया। बहुत-से राजनीतिक विचारकों ने उससे प्रेरणा ग्रहण करके अत्यधिक ठोस, सर्वाधिक महत्वपूर्ण राजनीतिक संकल्पनाओं का विकास किया। जैसे - "राज्य" की संकल्पना, और मैक्यावली की दृष्टि से उसका वास्तविक आशय क्या है? सैबाइन के अनुसार, "किसी अन्य राजनीतिक विचारक की अपेक्षा मैक्यावली ने राज्य को वह आशय दिया जो आधुनिक राजनीतिक संदर्भ में दिया जाता है ..... एक संगठित शक्ति के रूप में राज्य एक विशिष्ट प्रकार की आधुनिक राजनीतिक संस्था बन गया है जिसने आधुनिक समाज में सर्वाधिक सशक्त संस्था का रूप धारण कर लिया है।"

मैक्यावली को आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत के जनक के रूप में जाना जाता है। राज्य के संबंध में सिद्धांत स्थापना के अलावा उसमें संप्रभुता (sovereignty) की संकल्पना को भी अर्थ प्रदान किया। लेकिन उसने कभी भी सर्वशक्तिमान विधि प्रदाता के सामान्य सिद्धांत में अपने विश्वास को तानाशाही या निरंकुश राजतंत्र के सामान्य सिद्धांत में नहीं बदलने दिया, जैसा कि बाद के लेखक हॉब्स ने किया। संप्रभुता की यह संकल्पना, चाहे वह आंतरिक हो या बाहरी, राज्य को स्थायी बनाने तथा उसे आंतरिक और बाहरी दृष्टि से सुरक्षित बनाने पर आधारित थी और इसके लिए उसने शासक को जो निरंकुश शक्ति प्रदान करने की सिफ़ारिश की उसमें यह संकल्पना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उसके इस विचार को बाद में फ्रांसीसी विचारक जीन बोदिन ने राज्य की संप्रभुता के व्यवस्थित सिद्धांत के रूप में विकसित किया जबकि ह्यूगो ग्रोटियस ने इससे विधि-सम्मत संप्रभुता के सिद्धांत का निर्माण किया, जिसे और विकसित करके अंग्रेज़ सिद्धांतवादी जॉन ऑस्टिन ने इसे उपयुक्त रूप प्रदान किया। इससे पूर्व हॉब्स ने अपने सामाजिक संविदा (contract) के सिद्धांत को न्यायोचित ठहराते हुए मैक्यावली की मानव प्रकृति की संकल्पना को ग्रहण किया और उसके आधार पर अपने सामाजिक संविदा सिद्धांत (Social contract theory) तथा निरंकुश सप्रभुता के सिद्धांत (Theory of Absolute Sovereignty) का विकास किया।

मैक्यावली पहला व्यक्ति था जिसने धर्मनिरपेक्षता (secularism) का विचार प्रस्तुत किया। ऐलन के अनुसार, "मैक्यावली की राज्य की अवधारणा पूरी तरह से धर्मनिरपेक्ष राज्य की थी।" यद्यपि उसने राज्य में धर्म को महत्वपूर्ण स्थान दिया, लेकिन साथ ही दोनों में स्पष्ट अंतर भी किया। उसने धर्म को राज्य की व्यवस्था के अधीन रखा न कि राज्य के ऊपर और उसके विचार में, "धार्मिक अनुष्ठानों का पालन कामनवेल्थ (राष्ट्र) के बड़प्पन का कारण है, और यदि उनकी उपेक्षा की जाए तो वे उसके विनाश के कारण होंगे।"

मैक्यावली के आध्यात्मिक हितों के बजाय भौतिक हितों में विश्वास ने पहले हीगल और बाद में मार्क्स को प्रभावित किया। इसके आधार पर ही इन दोनों ने राज्य के भौतिक उद्‌गम के सिद्धांत का प्रतिपादन किया। मैक्यावली ही सबसे पहले विवर्धन के सिद्धांत का प्रतिपादक था जो आधुनिक शक्ति की राजनीति का आधार है। रोज़मर्रा की अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में प्रत्येक राज्य दूसरे राज्य की तुलना में अपनी आर्थिक और सैनिक शक्ति बढ़ाने में संलग्न है।

मैक्यावली राजनीतिक चिंतन के इतिहास में पहला उपयोगितावादी (pragmatist) था। राजनीति की समस्याओं के प्रति उसका रवैया और पद्धति सामान्य ज्ञान और इतिहास द्वारा निर्देशित थी। प्रोफेसर मैक्सी के अनुसार : "उसके सैद्धांतिक पक्ष के बजाय व्यावहारिक पक्ष के प्रति उत्साह ने निश्चित रूप से उसके राजनीतिक विचार को मध्य युगों के शास्त्रीय रूढ़िवाद से बचाने में पर्याप्त सहायता की।" मैक्यावली का राज्य की सर्वशक्तिमत्ता से आशय यह था कि यह सरकार का काम है कि वह व्यक्ति और संपत्ति को सुरक्षा प्रदान करे। इसका काफी स्थायी और व्यापक प्रभाव रहा। उसके विचार अपनी प्रकृति और व्यवहार में क्रांतिकारी थे। उसने राजनीति को राजनीतिक व्यवहार के समान ला खड़ा किया। अंत में, यह कहा जा सकता है कि मैक्यावली की नैतिकता और धर्म की दोषदर्शितापूर्ण उपेक्षा के कारण उसके प्रति पर्याप्त घृणा और द्वेष व्यक्त किया गया। अब अनैतिकता के लिए मैक्यावलीवाद शब्द एक कहावत बन गया है; लेकिन इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि उसने "प्रिंस" और "डिस्कोर्सेज़" की रचना मुख्य रूप से राज्य के संरक्षण की दृष्टि से की, इसके अलावा अन्य सभी बातें गौण थीं। इसमें कोई संदेह नहीं कि मैक्यावली स्पष्ट, साहसी और ईमानदार व्यक्ति था और साथ ही वह वास्तविक राजनीति को समझने में व्यावहारिक था। इस कारण वह अपने समय में और आज तक राजनयिकों का प्रिय बना हुआ है। यदि हम एक बार फिर मैक्यावली को उस दुनिया को लौटा सकें जहाँ आरंभ में उसके विचारों ने स्वरूप ग्रहण किया तो हम अपने युग में प्रचलित नैतिक मान्यताओं पर आक्रमण की उसकी असाधारण मौलिकता की प्रशंसा आरंभ कर सकते हैं और एक बार हम उसके नैतिक दृष्टिकोण के प्रभाव को समझ लें तो हम स्पष्ट रूप से अनुभव कर सकते हैं कि जब कभी राजनीतिक शक्ति और नेतृत्व की चर्चा होती है तो उसके नाम को इतना आदर के साथ क्यों लिया जाता है।" (स्किनर, 1981 : 2)

5.10 साराश

मैक्यावली अत्यधिक परिवर्तनशील युग और समय की देन है जिसे पोप के प्राधिकार और उसकी अध्यात्म की शिक्षाओं के विरुद्ध सुनिश्चित प्रतिक्रिया के लिए जाना जाता है। राजनीति को धर्म की बेड़ियों से मुक्त कराने के कारण उसे आधुनिक युग का श्रीगणेश करने वाला माना जाता है। मैक्यावली की पद्धतियाँ ऐतिहासिक थीं, परंतु वह स्वयं राजनीतिक यथार्थवादी था। उसे राज्य के सिद्धांत के बजाय सरकार के वास्तविक क्रियाकलापों की अधिक चिंता थी। उसने अपने सिद्धांतों का निर्माण उन आधारभूत तथ्यों पर किया जिनके अनुसार मनुष्य अनिवार्य रूप से चालाक और स्वार्थी है। उसके मत में राज्य मनुष्यों का सबसे बड़ा संघ है और वह मनुष्य के कल्याण को बढ़ावा देने का आवश्यक साधन है। सफल राजा या "प्रिंस" को समझदारी और आत्म-नियंत्रण का साकार रूप होना चाहिए और उसे अपने गुण-दोषों का भरपूर इस्तेमाल करना आना चाहिए। राजा की सफलता के दो आधारभूत साधन हैं - कानून और शारीरिक शक्ति का विवेकपूर्ण उपयोग। शासक कानून और नैतिकता का सृजन करने वाला है।

मैक्यावली के चिंतन में कुछ अंतर्विरोधों की ओर भी संकेत किया गया है। उसने उत्कृष्ट कानून और नागरिकों के सभ्य गुणों पर आश्रित राज्य के संरक्षण पर तो बल दिया लेकिन उसके विचारों से यह स्पष्ट नहीं है कि उसे किस प्रकार की सरकार पसंद थी। वह राजतंत्रों के साथ विस्तारित रोमन गणराज्य का भी गुणगान करता है। उसके सिद्धांतों का विकास व्यवस्थित रूप में नहीं हुआ है, ये सिद्धांत मुख्य रूप से फुटकर अभिव्यक्तियों के रूप में मिलते हैं। उसकी प्रत्येक रचना में सत्य की

अभिव्यक्ति हुई है। लेकिन इन दोनों में से कोई भी रचना उसके विचारों को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त नहीं करती।